Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

वर्ष- 7
अंक- 41

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

16 रबीउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 13 इख़ा 1401 हिज्री शम्सी, 13 अक्टूबर 2022 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ اِذۡ ہَدَیۡتَنَا وَہَبۡ لَنَا مِنۡ لَّدُنۡکَ رَحۡمَۃً ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ الۡوَہَّابُ

(आले इमरान : 9)

अनुवाद : हे हमारे रब हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे बाद इसके कि तू हमें हिदायत दे चुका हो और हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर। निसंदेह तू ही है जो बहुत अता करने वाला है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

बच्चों पर ख़र्च करने के लिए पति को बताए बग़ैर कुछ ले लेना

(2211) हज़रत आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हिंद ने जो मुआविया की माँ थीं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि अबूसुफ़ियान बड़ा कंजूस आदमी है तो क्या इस सूरत में मुझ पर कोई गुनाह होगा कि उसके माल से पोशीदा तौर पर कुछ लेलूं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम इतना माल ले लो जितना तुझे और तेरे बेटों को काफ़ी हो सके।

मुर्दार खाना हराम है
उसकी खाल से फ़ायदा उठाना जायज़ है

(2221) हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक मुर्दा बकरी के पास से गुज़रे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुमने उसकी खाल से फ़ायदा क्यों नहीं उठाया? उन्होंने कहा वह तो मुर्दार है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया सिर्फ़ उसका खाना ही हराम है।

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के काम

(2222) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है, क़रीब है कि इब्ने मरियम अलैहिस्सलाम ज़रूर तुम में नाज़िल होंगे। वह बतौर हक्म अदल होंगे जो सलीब तोड़ डालेंगे और सूअर क़तल करेंगे और जंग स्थगित करेंगे और माल की इस क़दर बोहतात होगी कि कोई उसे क़बूल नहीं करेगा।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् बियू, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

मैंने उन एतराज़ों को जमा किया है, जो ईसाइयों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किए हैं, उनकी संख्या तीन हज़ार तक पहुंची है और जिस क़दर किताबें और रिसाले और इश्तेहार आए दिन उन लोगों की तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एतराज़ों की शक्ल में प्रकाशित होते हैं उनकी संख्या छः करोड़ तक पहुंच चुकी है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

اَلدَّجَّال : दजल यह है कि अंदर नाक़िस चीज़ हो और ऊपर कोई साफ़ चीज़ हो। उदाहरणतः ऊपर सोने का मुलम्मा हो और अंदर ताँबा हो। यह दजल संसार के आरंभ से चला आता है। छल और झूठ से कोई ज़माना ख़ाली नहीं रहा। स्वर्णकार क्या करते हैं। जैसे दुनिया के कामों में दजल है वैसे ही रुहानी कामों में भी दजल होता है يُحَرِّفُوۡنَ الۡکَلِمَ عَنۡ مَّوَاضِعِہٖ (अल् निसा : 47) भी दजल ही है। जो आलेइमरान :56 یٰعِیۡسٰۤی اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡکَ को उल्टाते हैं यह भी दजल है। परन्तु अंतिम ज़माना का दजल अज़ीमुश्शान दजल होगा। मानो दज्जालिय का एक दरिया बह निकलेगा। अल् दज्जाल पर आले इस्तिग़राक़ का है। अतः अल् दज्जाल दजजला मुख़्तलिफ़ा का बुरूज़ है। अर्थात पहले जिस क़दर मुख़्तलिफ़ और मुतफ़र्रिक़ कैद, हीले, ज़लालत और कुफ़्र के थे, किसी ज़माना में नालायक़ लोगों ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा, मुतफ़र्रिक़ तौर पर जिस क़दर एतराज़ात इस्लाम पर किए जाते थे, परन्तु वे एक हद तक थे लेकिन अल्लाह तआला को मालूम था कि एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि इस वक़्त एतराज़ात का एक दरिया बह निकलेगा। जैसे छोटी-छोटी नहरें और नदियाँ मिलकर एक दरिया बन जाता है इसी तरह समस्त दजल मिलकर एक बड़ा दजल होगा।

इसलिए इस ज़माना में देख लो कि कितना बड़ा दजल हो रहा है। हर तरफ़ से इस्लाम पर नुक्ता चीनियां और एतराज़ किए जाते हैं। और ईसाइयों ने तो हद कर दी है। मैं ने इन एतराज़ों को जमा किया है,जो ईसाइयों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर किए हैं। उनकी संख्या तीन हज़ार तक पहुंची है और जिस क़दर किताबें और रिसाले और इश्तिहार आए दिन उन लोगों की तरफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर एतराज़ों की शक्ल में प्रकाशित होते हैं उनकी संख्या छः करोड़ तक पहुंच चुकी है। मानो हिन्दुस्तान के मुस्लमानों में से हर एक आदमी के हाथ में ये लोग किताब दे सकते हैं। अतः सबसे बड़ा फ़िला यही ईसाइयों का फ़िला है और अल् दज्जाल का बुरूज़ है। (मलफ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 402 प्रकाशन क़ादियान 2018 ई.)

★ ★ ★

तय्यब के लिए जहां सेहत के लिहाज़ से अच्छा होना शर्त है वहां यह भी शर्त है कि उसके खाने से इन्सान के दूसरे हवास या दूसरे बनीनौ इन्सान या दूसरी मख़लूक़ का हक़ न मारा जाए बल्कि दूसरों के जज़बात को मद्द-ए-नज़र रखना भी ज़रूरी है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सूरत आयत : 116

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَیۡکُمُ الۡمَیۡتَۃَ وَالدَّمَ وَلَحۡمَ الۡخِنۡزِیۡرِ وَمَاۤ اُہِلَّ لِغَیۡرِ اللّٰہِ بِہٖ ۚ فَمَنِ اضۡطُرَّ غَیۡرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰہَ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ

(अनुवाद : उसने तुम पर केवल मुर्दार को और ख़ून को और सूअर के गोश्त को और (हर उस चीज़ को हराम किया है जिस पर अल्लाह (तआला) के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो और जो शख़्स (उनमें से किसी चीज़ के खाने पर) मजबूर किया जाए जबकि वह न बाग़ी हो और न हद से बढ़ने वाला हो तो (याद रहे) कि अल्लाह (तआला) निसंदेह बहुत ही बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

असल बात यह है कि खाने की चीज़ों के विषय में इस्लाम ने कई दर्जे बताए हैं। हराम, ममनू, हलाल, तय्यब। हराम वह जिसे क़ुरआन ने हराम किया। ममनू जिसे क़ुरआन-ए-करीम के बताए हुए उसूल के मुताबिक़ रसूले करीम सल्लल्लाहो ने मना फ़रमाया या बाद की मालूम शुदा चीज़ जिसके विषय में तहक़ीक़ात करके मुस्लमान उसे न-पसंदीदा क़रार दे दें।

हलाल। वह जो अपनी असल बनावट के लिहाज़ से तय्यब हो।

तय्यब। वह जो अपनी मौजूदा हालत में भी तय्यब हो। अर्थात हर वे चीज़ जिसको किसी सूरत में भी खाना जायज़ है उसको हलाल कहेंगे जैसे बक़रा हलाल है। परन्तु चूँकि कच्चे गोश्त की सूरत में खाया नहीं जा सकता इस लिए इस सूरत में तय्यब नहीं होगा। लेकिन इसको पका के खाना तय्यब होगा।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-9)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर पधारे। और प्रस्थान से पूर्व होटल के मालिकऔर उसकी पत्नी ने हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। और इन दोनों ने बरमला इस बात का प्रकटन किया है हुज़ूर अनवर की यहां बाबरकत आमद हमारे लिए एक सआदत है। चार बजकर 40 मिनट पर यहां से रवाना हुए और लगभग चार घंटे के यात्रा और 430 किलोमीटर से अधिक यात्रा करने के बाद आठ बज कर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बेतुल सबूह तशरीफ़ आवरी हुई।

जमाअत के लोग पुरुष और महिलाएं अपने प्यारे आक़ा की आमद के मुंतज़िर थे। जूंही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर पधारे तो आदरणीय अब्दुल अव्वल साहब मुबल्लिग़ सिलसिला और नायब अमीर बंगला देश ने अपने प्यारे आक़ा से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। वह जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने के लिए आए थे और प्रोग्राम के अनुसार जलसा में उनकी बहैसियत मेहमान तक़रीर थी।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पौने दस बजे पधार कर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

11 जून 2014 बुधवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लंदन केंद्र और संसार के विभिन्न दूसरे देशों की ओर से प्राप्त होने वाली डाक, पत्र, रिपोर्टस और फैक्सज़ मुलाहिज़ा फ़रमाएं और प्रत्येक ख़त और रिपोर्टस और मामलात मुलाहिज़ा फ़रमाने के बाद अपने दस्तख़त फ़रमाए और कुछ रिपोर्टस और पत्र पर अपने पवित्र हाथ से इर्शादात फ़रमाए और हिदायात से नवाज़ा।

फ़ैमिली और इन्फ़िरादी मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार ग्यारह बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर पधारेऔर फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज सुबह के इस सैशन में 27 फ़ैमिलीज़ के 96 लोग और 48 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अर्थात कुल 144 लोगों ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की विभिन्न 45 जमाअतों और शहरों से आई Kassel से आने वाली फ़ैमिलीज़ 190 किलोमीटर कोलोन Kolon से आने वाली 196 किलोमीटर और बर्लिन Berlin से आने वाली फ़ैमिलीज़ 550 किलोमीटर का लम्बी यात्रा करके पहुंची थीं। इसके अतिरिक्त मुल्क नाईजेरिया Niger बेनिन Benin मारीशस, पाकिस्तान और ताज़ाकस्तान Tajkistan से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

समारोह

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम एक बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां आमीन का समारोह हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक निमंलिखित 24 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

निमंलिखित ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चियों ने इस समारोह में शामिल हुए :

प्रिय दानियाल महमूद, काशिफ़ महमूद, दानियाल अहमद, अमन महमूद, आईलिन बट, शामीर अदनान, फरहीन महमूद, ख़िज़्र सईद सज्जाद, फ़ैज़ानुल्लाह वहीद, आलीशा अहमद, ख़दीजा अज़ीज़, मिर्ज़ा फ़वाद अहमद, नशना राबायल, फ़रहान काशिफ़, अम्तुल क़ुद्दुस, सबीह अहमद उठवाल, बदर महमूद शेख़, सारब सजील महमूद, बासमा महमूद, अरुसा ज़ियाउल्लाह, महक हई, सफ़वान मुबश्शिर बाजवा, शमायल अहमद, जाज़िबा अकबर।

इस समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्त रहे।

फ़ैमिली और इन्फ़िरादी मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 34 फ़ैमिलीज़ के 110 लोग और 43 लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर अर्थात संपूर्णता 153 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ फ्रैंकफ़र्ट और इसके विभिन्न हलक़ों के अतिरिक्त जर्मनी की अन्य 42 जमाअतों और शहरों से आई थीं और कुछ पाँच सौ किलोमीटर से अधिक बड़ी लम्बी यात्रा करके पहुंची थीं।

इसके अतिरिक्त देश फिनलैंड, यूक्रेन, नाईजीरिया, इंडिया, पाकिस्तान बुरकीना फासो, बंगलादेश, रुमानिया और रशिया से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। और प्रत्येक उन बाबरकत क्षण से बरकतें समेटते हुए बाहर आया। आज मुलाक़ात करने वालों में एक बहुत बड़ी संख्या इन फ़ैमिलीज़ और लोगों की थी जो अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पा रहे थे। ये पाकिस्तान से आने वाले वह लोग और फ़ैमिलीज़ थीं जो अत्यधिक बेसर-ओ-सामानी की हालत में अपने ही हम वतनों के ज़ुलम-ओ-सितम से तंग आकर इस दयार-ए-ग़ैर में पहुंची थीं। उनमें ऐसे लोग भी थे जो जेलों में क़ैद ओ बंद की सऊबतें सहते रहे और ऐसे लोग भी थे जिनके शरीर ग़ैरों के ज़ुलम-ओ-सितम से ज़ख़्मी भी हुए। माओं के साथ ऐसे बच्चे भी थे जिनको स्कूलों में शिक्षा से वंचित किया गया और इतना सताया गया कि वह स्कूल नहीं आ सकें। ऐसे लोग भी थे जिनको नौकरियों से वंचित किया गया। अहमदी होने के कारण ग़ैरों ने नौकरी से निकाल दिया।

ये सभी लोग मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले, उनकी तकालीफ़ और परेशानियाँ और दुख-भरी कहानियाँ राहत-ओ-सुकून और हृदय की शांति में बदल गईं। प्रत्येक ने अपने महबूब आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाया और ये कुछ मुबारक घड़ियाँ और क्षण उन्हें हमेशा के लिए सेराब कर गए प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को हुज़ूर अनवर ने क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों को हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ात के बाद एक नौजवान जो अपनी जीवन में पहली मर्तबा ख़लीफतुल मसीह से मिले थे कहने लगे कि इस प्रकार लगता है कि आज मैं जन्नत में दाख़िल हुआ हूँ। मुझे तो इस ज़मीन पर जन्नत मिल गई है। अब मैं इस से निकलना नहीं चाहता।

अपने प्यारे आक़ा से मिलकर एक 56 साला बुज़ुर्ग जब बाहर आए तो रो रहे थे।

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मंगल की शाम को तिथि बाईस जमादिउल आखिर तेराह हिज्री को तरेसठ साल की उम्र में इंतेक़ाल फ़रमाया

आप रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़िलाफ़त का समय दो साल तीन महीने दस दिन रहा... हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो नेरसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र और मंच के मध्य आप रज़ियल्लाहु अन्हो का जनाज़ा पढ़ाया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को रात के वक़्त उसी हुजरे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र के साथ दफ़न किया गया, आप रज़ियल्लाहु अन्हो का सिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधों के मुक़ाबिल में रखा गया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हो विशेषताओं का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 सितम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़िंदगी के कुछ वाक़ियात हैं जो वर्णन करूँगा। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया मुझे उमर के मुताल्लिक़ बताओ तो उन्होंने अर्थात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा। हे रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा! अल्लाह की क़सम वह अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की जो राय है उससे भी अफ़ज़ल हैं सिवाए इसके कि उनकी तबीयत में सख़्ती है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि सख़्ती इसलिए है कि वह मुझ में नरमी देखते हैं। अगर इमारत उनके सपुर्द हो गई तो वह अपनी बहुत सी बातें जो उनमें हैं उसको छोड़ देंगे क्योंकि मैंने उनको देखा है कि जब में किसी शख़्स पर सख़्ती करता तो वे मुझे उस शख़्स से राज़ी करने की कोशिश करते और जब में किसी शख़्स से नरमी का सुलूक करता तो इस पर मुझे सख़्ती करने को कहते। इस के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उसमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और उनसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा उनका बातिन उनके ज़ाहिर से भी बेहतर है और हम में इन जैसा कोई नहीं। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दोनों अस्हाब से फ़रमाया जो कुछ मैंने तुम दोनों से कहा है उसका वर्णन किसी और से न करना। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अगर मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को छोड़ता हूँ तो मैं उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से आगे नहीं जाता और उनको यह इख़्तेयार होगा कि वे तुम्हारे उमूर के विषय में कोई कमी न करें। अब मेरी यह ख़्वाहिश है कि मैं तुम्हारे उमूर से अलैहदा हो जाऊं और तुम्हारे पुराने युग के लोग में से हो जाऊं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बीमारी के दिनों में हज़रत तलहा बिन अबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लोगों पर ख़लीफ़ा बना दिया है हालाँकि आप देखते हैं कि वह आपकी मौजूदगी में लोगों से किस तरह सुलूक करते हैं और उस वक़्त क्या हाल होगा जब वह तन्हा होंगे और आप अपने रब से मुलाक़ात करेंगे और वश आपसे जनता के बारे में पूछेगा अर्थात अल्लाह तआला आप से अपनी जनता के बारे में पूछेगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो लेटे हुए थे।आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मुझे बिठा दो। जब उन को बिठाया गया और वह सहारा लेकर बैठे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा : क्या तुम मुझे अल्लाह से डराते हो? जब मैं अपने रब से मिलूँगा और वह मुझसे पूछेगा तो मैं जवाब दूँगा कि मैंने तेरे बंदों में से बेहतरीन को तेरे बंदों पर ख़लीफ़ा बनाया है।

(अल्कामिल फ़िल तारीख़ लेइब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 272 से 273दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2003 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस बारे में तारीख़ की कुतुब के हवाले से बयान फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात जब क़रीब आई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने सहाबा से मश्वरा लिया कि मैं किस को ख़लीफ़ा निर्धारित करूँ। अक्सर सहाबा ने अपनी राय हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की इमारत के मुताल्लिक़ ज़ाहिर की और कुछ ने सिर्फ यह एतराज़ किया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत में सख़्ती ज़्यादा है। ऐसा न हो कि लोगों पर तशद्दुद करें। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया यह सख़्ती उसी वक़्त तक थी जब तक उन पर ज़िम्मेदारी नहीं पड़ी थी अब जबकि एक ज़िम्मेदारी उन पर पड़ जाएगी तो उनकी सख़्ती का माद्दा भी एतेदाल के अंदर आ जाएगा। इसलिए समस्त सहाबा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त पर राज़ी हो गए। आपकी, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की सेहत चूँकि बहुत ख़राब हो चुकी थी, इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी बीवी अस्मा का सहारा लिया और ऐसी हालत में जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पांव लड़खड़ा रहे थे, हाथ काँप रहे थे आप रज़ियल्लाहु अन्हो मस्जिद में आए और तमाम मुस्लमानों से ख़िताब करते हुए कहा कि मैंने बहुत दिनों तक नियमित इस अमर पर ग़ौर किया है कि अगर मैं वफ़ात पा जाऊं तो तुम्हारा कौन ख़लीफ़ा हो। आख़िर बहुत कुछ ग़ौर करने और दुआओं से काम लेने के बाद मैंने यही मुनासिब समझा है कि उमर को ख़लीफ़ा नामज़द कर दूं। अतः मेरी वफ़ात के बाद उमर तुम्हारे ख़लीफ़ा होंगे।

सब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे लोगों ने इस इमारत को तस्लीम किया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की बैअत हो गई।

(उद्धरित ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 483-484)

फिर इस बारे में मज़ीद एक जगह इस एतराज़ का जवाब देते हुए कि नामज़द क्यों किया, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "अगर कहा जाए कि जब क़ौम के इंतेख़ाब से ही कोई ख़लीफ़ा हो सकता है तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को नामज़द क्यों किया था तो इस का उत्तर यह है कि आपने यूंही नामज़द नहीं कर दिया बल्कि पहले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से आपका मश्वरा लेना साबित है। फ़र्क़ है तो सिर्फ इतना कि और खलिफ़ा-ए-को ख़लीफ़ा की वफ़ात के बाद मुंतख़ब किया गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की मौजूदगी में ही मुंतख़ब कर लिया गया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसी पर बस नहीं किया।" अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यहीं पर बस नहीं किया, उसको काफ़ी नहीं समझा "कि चंद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्वरा लेने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त का ऐलान कर दिया हो बल्कि बावजूद सख़्त नक़ाहत और कमज़ोरी के आप रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी बीवी का सहारा लेकर मस्जिद में पहुंचे और लोगों से कहा कि हे लोगो! मैंने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से मश्वरा लेने के बाद अपने बाद ख़िलाफ़त के लिए उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को पसंद किया है क्या तुम्हें भी उनकी ख़िलाफ़त मंज़ूर है? इस पर समस्त लोगों ने अपनी पसंदीदगी का इज़्हार किया। अतः यह भी एक रंग में इंतेख़ाब ही था।"

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम, भाग 15 पृष्ठ 555)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीमारी और वसीयत के बारे में तारीख़ तिबरी में मज़ीद लिखा है हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की कमज़ोरी और वफ़ात का ज़िक्र यूं वर्णन हुआ है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बीमारी का बायस यह हुआ कि सात जमादीउल आखिर सोमवार के दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ग़ुसल किया। इस रोज़ ख़ूब सर्दी थी। इस वजह से आप रज़ियल्लाहु अन्हो को बुख़ार हो गया जो पंद्रह रोज़ तक रहा। यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो नमाज़ के लिए बाहर आने के काबिल न रहे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दे दिया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो नमाज़ पढ़ाते रहें। लोग आप रज़ियल्लाहु अन्हो की इयादत के लिए आते थे परन्तु रोज़ बरोज़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत ख़राब होती गई। इस ज़माने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस मकान में ठहरे हुए थे जो उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इनायत फ़रमाया था और जो हज़रत उसमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान के सामने वाक़्य था। अलालत के ज़माने में ज़्यादा-तर आपकी तीमारदारी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु करते रहे।

(अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 348 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो पन्द्रह दिन तक बीमार रहे। किसी ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो तबीब को बुला लें तो अच्छा है। फ़रमाया : वह मुझे देख चुका है। लोगों ने पूछा कि उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से क्या कहा है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उसने यह कहा है कि إِنِّىْ فَعَّالٌ لِّمَا أُرِيْدُ, मैं जो चाहता हूँ करता हूँ।

(तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 347 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान 2012 ई.)

एक दूसरी रिवायत में है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बीमार हुए तो लोगों ने पूछा कि क्या हम आपके लिए तबीब को बुला लें तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उसने मुझे देख लिया है और कहा है कि थी إِنِّىْ فَعَّالٌ لِّمَا أُرِيْدُ, मैं जो चाहूँगा ज़रूर करूँगा।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा लेइब्ने असद, मुजद्दिद सालिस, पृष्ठ 148 अबू बकर सिद्दीक़, ذکر وصیۃ ابی بکر, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

बहरहाल आपकी मुराद यह थी कि अल्लाह तआला का अब यही इरादा है कि मुझे अपने पास बुला ले और किसी तबीब की ज़रूरत नहीं है।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मंगल की शाम को बतारीख़ बाईस जमादीउल आखिर तेराह हिज्री को तरेसठ साल की आयु में इंतेक़ाल फ़रमाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का अह्द ख़िलाफ़त दो साल तीन महीने दस रोज़ रहा।

(उद्धरित अल् तब्क़ातुल कुबरा लेइब्ने असद, मुजद्दिद सालिस पृष्ठ 151 अबूबकर सिद्दीक़, ذکر وصیۃ ابی بکر , दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के होंठों से जो आख़िरी शब्द अदा हुए वह क़ुरआन-ए-करीम की यह आयत मुबारका थी कि تَوَفَّنِىْ مُسْلِمًا وَّأَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ : 102 अर्थात मुझे फ़रमांबर्दार होने की हालत में वफ़ात दे और मुझे सालेहीन के ज़ुमरे में शुमार कर। (अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 478 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ की अँगूठी का नक़्श نِعْمَ الْقَادِرُ اللّٰہ था अर्थात क्या ही क़ुदरत रखने वाला है अल्लाह तआला।

(तबक़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 158दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मेरी तजहीज़-ओ-तकफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर देखना कि कोई और चीज़ तो नहीं रह गई। बाक़ी चीज़ें तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को दे दी थीं। अगर हो तो उसको भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेज देना। तजहीज़-ओ-तकफ़ीन के विषय में फ़रमाया इस वक़्त जो कपड़ा बदन पर है उसी को धो कर दूसरे कपड़ों के साथ कफ़न देना। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ क्या यह तो पुराना है। कफ़न के लिए नया होना चाहिए। फ़रमाया जीवित मर्दों की बनिसबत नए कपड़ों के ज़्यादा हक़दार हैं। (सैर सहाबा, भाग प्रथम, पृष्ठ 50 दारुल इशात कराची) जो नया कपड़ा है वह किसी ज़िंदा को पहना दो ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वसीयत की थी कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की पत्नी हज़रत अस्मा बिंत अमीस आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ग़ुसल दें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साहबज़ादे हज़रत अब्दुर्रहमान ने उनके साथ मुआवनत की। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का कफ़न दो कपड़ों पर मुश्तमिल था। उनमें से एक कपड़ा ग़ुसल के लिए इस्तेमाल होने वाला था। यह भी रिवायत है कि तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया। फिर आपको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चारपाई पर रखा गया। यह वह चारपाई थी जिस पर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा सोया करती थी। इसी चारपाई पर आपका जनाज़ा उठाया गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र और मिंबर के दरमयान आप रज़ियल्लाहु अन्हो का जनाज़ा पढ़ाया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को रात के वक़्त इसी हुजरे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ब्र के साथ दफ़न किया गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का सिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कंधों के मुक़ाबिल में रखा गया।

(मुस्तदरक हाकिम, जुज़ सालिस, पृष्ठ 66 हदीस नंबर 4409 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

तदफ़ीन के वक़्त हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उसमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुल रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो क़ब्र में उतरे और तदफ़ीन की। इब्न-ए-शहाब से मर्वी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को रात के वक़्त दफ़्न किया।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 156 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत सालिम बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो अपने वालिद का यह क़ौल बयान करते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का कारण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का ग़म था क्योंकि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो का जिस्म नियमित कमज़ोर से कमज़ोर-तर होता गया यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो का इंतेक़ाल हो गया।

(मुस्तदरक हाकिम, भाग 3 पृष्ठ 66 हदीस नंबर 4410 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बाअज़ सीरत निगारों ने यह भी वर्णन किया है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का बायस वह खाना था जिसमें किसी यहूदी ने ज़हर मिलाया था लेकिन उमूमन सीरत निगारों ने इस रिवायत का खंडन भी किया है।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ उमर अबू अंसर (अनुवादक पृष्ठ 726 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान फ़रमाती हैं कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने पूछा यह कौन सा दिन है? लोगों ने कहा सोमवार। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा अगर आज मैं फ़ौत हो जाऊं तो कल का इंतेज़ार न करना क्योंकि मुझे वह दिन या रात ज़्यादा महबूब है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़्यादा क़रीब हो।(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 1 पृष्ठ 88 मस्नद अबी बिक्र सिद्दीक़, हदीस 45 आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)अर्थात तदफ़ीन वहां हो जाए तो ज़्यादा बेहतर है।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने तर्के की बाबत फ़रमाया कि मेरे बाद क़ुरआन के आदेशों के मुताबिक़ इसे तक़सीम कर दिया जाए।

(सीरत ख़ुलफ़ाए राशिदीन अज़ मुहम्मद इलयास आदिल, पृष्ठ 152 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)

इसी तरह एक रिवायत यह भी है कि आपने अपने मतरूका माल में से रिश्तेदारों के लिए जो वारिस नहीं थे पांचवें हिस्से की वसीयत की थी।

(अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 475 इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़्वाज और औलाद के बारे में वर्णन है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की चार बीवियां थीं। नंबर एक क़ुतैला बिंत अबुल उज़्ज़ा। उनके इस्लाम लाने के बारे में इख़्तेलाफ़ है। यह हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा की माता थीं। हज़रत अबू

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें ज़माना-ए-जाहिलियत में तलाक़ दे दी थी। यह एक मर्तबा मदीना में हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा अर्थात अपनी बेटी के पास कुछ घी और पनीर बतौर भेंट लेकर आई थीं मगर हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वह हदिया लेने से इंकार कर दिया और उन्हें घर में दाख़िल भी नहीं होने दिया और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को कहला भेजा कि इस बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरयाफ़्त करें। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा कि ज़रा पूछ के बताएं कि मेरी माँ इस तरह आई है और तोहफ़ा लाई है। मैंने तो उन्हें घर में दाख़िल नहीं होने दिया। क्या इरशाद है? इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनको घर में आने दो और उनका हदया क़बूल करो।

नंबर दो जो पत्नी थीं वह हज़रत उम्मे रूमान बिंत आमिर रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। आपका ताल्लुक़ बनू किनान बिन ख़ुज़ैमा से था। आपके पहले पति हारिस बिन सखब्रा मक्का में फ़ौत हो गए उसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अक़्द में आ गईं। आप इबतेदा में इस्लाम ले आएं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की और मदीना की तरफ़ हिज्रत की। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बतन से हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत हुई। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात छः हिज्री में मदीना में हुई। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद उनकी क़ब्र में उतरे और उनकी मग़फ़िरत की दुआ फ़रमाई।

तीसरी हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा बिंत उमेस बिन माबद बिन हारिस थीं। आपकी कुन्नियत उम्मे अब्दुल्लाह है। आप मुस्लमानों के दारे अर्क़म में दाख़िल होने से पहले ही इस्लाम क़बूल करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत कर चुकी थीं। आप इबतेदाई हिज्रत करने वाली थीं। आप ने अपने ख़ावंद हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ पहले हब्शा की तरफ़ हिज्रत की और वहां से सात हिज्री में मदीना तशरीफ़ लाएंगे। आठ हिज्री में जंग मौता में जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हो गए तो आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अक़्द में आ गईं। आपके बतन से मुहम्मद बिन अबू बकर पैदा हुए।

चौथी बीवी हज़रत हबीबा बिंत ख़अरिजा बिन ज़ैद बिन अबू ज़ोहरा थीं। उनका ताल्लुक़ अंसार की शाख़ ख़ज़रज से था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना के मुज़ाफ़ाती इलाक़े सख़ में आपके साथ रहा करते थे। आपके बतन से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की साहबज़ादी उम्मे कुलसूम पैदा हुईं जिनकी विलादत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के कुछ अरसा बाद हुई।

औलाद में तीन बेटे और तीन बेटियां थीं। पहले बेटे हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो। आप रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के सबसे बड़े बेटे थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो हदीबीह के दिन मुस्लमान हुए और फिर इस्लाम पर साबित-क़दम रहे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत हासिल रही। आप रज़ियल्लाहु अन्हो शजाअत और बहादुरी में बहुत मशहूर थे। इस्लाम क़बूल करने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो का काबिल-ए-तारीफ़ मौक़िफ़ रहा।

दूसरे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिज्रत मदीना के अवसर पर अहम किरदार था। आप तमाम दिन मक्का में गुज़ारते और मक्का वालों की ख़बरें जमा करते और फिर रात के वक़्त चुपके से ग़ार में पहुंच कर वे ख़बरें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को सुनाते और सुबह के वक़्त वापिस मक्का में आ जाते। तायफ की जंग में आपको एक तीर लगा जिसका ज़ख़्म ठीक नहीं हुआ और आख़िर कार उसी की वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िलाफ़त में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने शहादत पाई।

मुहम्मद बिन अबू बकर तीसरे बेटे थे। आप हज़रत अस्मा बिंत अमीस के बतन से पैदा हुए। हज्जतुल विदा के अवसर पर ज़ुल हलीफ़ा में आपकी विलादत हुई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की गोद में आप ने परवरिश पाई और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दौर में आपको मिस्र का गवर्नर निर्धारित फ़रमाया। आप वहीं मारे गए। कुछ रिवायात में हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हो को क़तल करने वालों में उनका नाम भी लिया जाता है और इसी वजह से उनको क़तल किया गया। वल्लाहो आलम।

आपके बच्चों में से चौथी हज़रत अस्मा बिंत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ज़ातुल नातिकैन के नाम से मशहूर हैं। आप हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से उम्र में बड़ी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़ातुल नातिकैन के उपनाम से नवाज़ा था क्योंकि हिज्रत के अवसर पर उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अपने पिता के लिए तोशा तैयार किया और फिर उसको बाँधने के लिए कोई चीज़ नहीं मिली तो अपने कमरबंद को फाड़ कर तोशा बांध दिया। खाने का जो इंतेज़ाम किया था वे खाना कमर के कपड़े से बांध कर दे दिया। हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो से आपकी शादी हुई और बहालत हमल आपने मदीना हिज्रत की। हिज्रत के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बतन से हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो पैदा हुए जो हिज्रत के बाद पैदा होने वाले सबसे पहले बच्चे थे। हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा ने सौ साल उम्र पाई। आपकी वफ़ात मक्का में तेहत्तर हिज्री में हुई।

पांचवां बच्चा उम्मुल मोमेनीन हज़रत आईशा बिंत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नी थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो महिलाओं में सबसे बड़ी ज्ञानी थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को उम्मे अब्दुल्लाह की कुनिय्यत अता फ़रमाई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ मिसाली मुहब्बत थी। इमाम शाबी वर्णन करते हैं कि जब मसूक़ हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कोई रिवायत बयान करते तो कहते मुझ से सिद्दीक़ा बिंत सिद्दीक़ ने वर्णन किया जो अल्लाह के महबूब की महबूबा हैं और जिनकी बरीयत अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाई है।

आपकी वफ़ात तरेसठ साल की आयु में सत्तावन हिज्री में हुई। एक रिवायत के मुताबिक़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात अट्ठावन हिज्री में हुई।

छठी औलाद उम्मे कुलसूम बिंत अबू बकर थीं। आप हज़रत हबीबा बिंत ख़ारिजा अनसारिया के बतन से पैदा हुईं। वफ़ात के वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया ये तुम्हारे दोनों भाई और दोनों बहनें हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि ये मेरी बहन अस्मा हैं उन्हें तो मैं जानती हूँ मगर मेरी दूसरी बहन कौन है? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया जो ख़ारिजा की बेटी के बतन में है। अर्थात अभी पैदा नहीं हुई, जो पैदा होने वाली है वह बेटी होगी। उन्होंने कहा कि मेरे दिल में ये बात बैठ गई कि उनके हाँ लड़की होगी इसलिए ऐसा ही हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद उम्मे कुलसूम की विलादत हुई। उम्मे कुलसूम की शादी हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह से हुई जो जंग-ए- जमल में शहीद हुए। (उद्धरित अज़ सय्यदना अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर सलाबी, पृष्ठ 48 से 52अल् फ़ुरकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ ज़िला मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)(अल् बिदाया वन्हाया, भाग 8 पृष्ठ 99- 58, ممن توفی فی ھذہ السنة, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)(ओसोदुल गाबा, भाग 5 पृष्ठ 98 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(असाबा, भाग 8, पृष्ठ 392 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

कुछ रिवायात के मुताबिक़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की एक बेटी की शादी हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो से हुई थी और यह भी वर्णन किया जाता है कि यह बेटी आपकी चार बीवियों में से किसी बीवी के पहले ख़ावंद से थी।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो, अज़ उम्र अबू अनसर)
(अनुवादक पृष्ठ 647 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)

निज़ाम-ए-हुकूमत के बारे में कि किस तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हो निज़ाम हुकूमत चलाते थे लिखा है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को कोई काम पेश आता तो फिर जहां मश्वरे की ज़रूरत होती और मश्वरा देने वाले लोगों की ज़रूरत होती, अहल-ए-फ़िक्ह का मश्वरा लेना चाहते तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो मुहाजेरीन और अंसार में से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबी बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो कोभी बुलाते। (अल् तब्कातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 267 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2012ई.) या बाज़-औक़ात ज़्यादा संख्या में मुहाजेरीन और अंसार को जमा फ़रमाते।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु شَاوِرْهُمْ(आले इमरान : 160) की तशरीह करते हुए वर्णन फ़रमाते हैं कि इस एक लफ़्ज़ पर ग़ौर करो। इस से मालूम होता है कि मश्वरा लेने वाला एक है दो भी नहीं और जिनसे मश्वरा लेना है वे बहरहाल तीन या तीन से ज़्यादा हों। फिर वे इस मश्वरे पर ग़ौर करे। फिर हुक्म है فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ (आले इमरान : 160) जिस बात पर अज़म करे उसको पूरा करे और फिर किसी की पर्वा न करे। अर्थात मश्वरा लेने वाला मश्वरा ले, उसके बाद, मश्वरा लेने के बाद सारा तजज़िया करके इस पर अमल करे और फिर किसी की पर्वा न करे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में इस अज़म की ख़ूब नज़ीर मिलती है। जब लोग मुर्तद होने लगे तो मश्वरा दिया गया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस लश्कर को रोक लें जो उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़ेरे कमान जाने वाला था परन्तु उन्होंने जवाब दिया कि जो लश्कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा है मैं उसे वापिस नहीं कर सकता। अबू क़हाफ़ा के बेटे की ताक़त नहीं कि ऐसा कर सके। फिर बाअज़ को रख भी लिया। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी इस लश्कर में जा रहे थे उनको रोक लिया।

फिर ज़कात के विषय में कहा गया कि मुर्तद होने से बचाने के लिए उनको माफ़ कर दो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया कि अगर यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ऊंट बाँधने की एक रस्सी भी देते थे तो वे भी लूँगा और अगर तुम सब मुझे छोड़कर चले जाओ और मुर्तद होने वालों के साथ जंगल के दरिंदे भी मिल जाएं तो मैं अकेला इन सब के साथ जंग करूँगा। यह अज़म का नमूना है। फिर क्क्य हुआ तुम जानते हो। यह अज़म था हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का और लोगों के मश्वरे और थे लेकिन क्या हुआ। जिस अज़म का नमूना आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने दिखाया ख़ुदा तआला ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के अज़म की वजह से फ़ुतूहात का दरवाज़ा खोल दिया। याद रखो जब ख़ुदा से इन्सान डरता है तो फिर मख़लूक़ का रोब उसके दिल-ए-पर असर नहीं करता।

(उद्धरित मन्सब-ए-ख़िलाफ़त, अनवारुल उलूम, भाग 2 पृष्ठ 58)

यह है मंसब-ए-ख़िलाफ़त की हक़ीक़त।

बैतुल माल का कियाम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहद-ए-मुबारक में ग़नीमत, ख़ुमुस, फै, ज़कात इत्यादि के जो अम्वाल आते थे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस वक़्त सबके सामने मस्जिद में बैठ कर तक़सीम कर देते थे और यूं कहा जा सकता है कि इस रंग में बैतुल माल का विभाग नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में मौजूद था। जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अहृद में फ़ुतूहात की वजह से दूसरी मद्दात के इलावा ग़नीमत और टैक्स की आमदनी भी काफ़ी ज़्यादा आनी शुरू हो गई, इस में इज़ाफ़ा हुआ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को एक बैतुल माल क़ायम करने की ज़रूरत महसूस हुई ताकि तक़सीम और ख़र्च हो जाने तक माल वहां रखा जा सके। इसलिए उन्होंने अकाबिर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के मश्वरा से एक मकान उस के लिए मुख़तस कर दिया लेकिन यह बैतुल माल नाम ही का रहा क्योंकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की हमेशा यही कोशिश होती थी कि नक़द और गल्ला आने के साथ ही तक़सीम कर दिया जाए।

कुछ रिवायात के मुताबिक़ महिकमा माल की ज़िम्मेदारी हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द हुई।

(عشرہ مبشرہ از بشیر ساجد अज़ बशीर साजिद पृष्ठ : 181 अल्-बदर पब्लिकेशन लाहौर 2000 ई.)

आग़ाज़ में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वादी-ए-सखा में बैतुल माल बनाया हुआ था उसके लिए कोई मुहाफ़िज़ निर्धारित नहीं था। सखा मदीना के मुज़ाफ़ात में मस्जिद नब्वी से तक़रीबन दो मील की दूरी पर एक जगह थी। एक मर्तबा किसी ने कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो बैतूल माल की हिफ़ाज़त के लिए कोई मुहाफ़िज़ क्यों निर्धारित नहीं फ़रमाते? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया उसकी हिफ़ाज़त के लिए एक किफ्ल काफ़ी है अर्थात ताला लगा हुआ ही काफ़ी है क्योंकि जो कुछ भी बैतुल माल में जमा होता था आप रज़ियल्लाहु अन्हो उसे तक़सीम फ़र्मा देते थे,

अक्सर ख़ाली ही रहता था यहां तक कि वह बिल्कुल ख़ाली हो जाता। फिर जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना मुंतक़िल हो गए तो बैतुल माल अपने घर में ही मुंतक़िल कर लिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का तरीक़ यह था कि जो माल बैतुल माल में होता लोगों को तक़सीम कर दिया करते यहाँ तक कि वह ख़ाली हो जाता और तक़सीम करने में हर एक को बराबर दिया करते थे और इसी माल से आप रज़ियल्लाहु अन्हो ऊंट, घोड़े और हथियार ख़रीद कर अल्लाह की राह में तक़सीम कर देते। एक दफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बद्दुओं से चादरें ख़रीद कर मदीना की विधवाओं में तक़सीम कीं।

(तारीख़ ख़ुल्फ़ा अज़ अल्लामा सियूती, पृष्ठ 63-64अल् बदर किताब अरबी बेरूत 1999 ई.)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 157 ज़व्वार अकैडमी कराची) तक़सीम तो कई दफ़ा की होंगी लेकिन बहरहाल यह वर्णन रिवायत में एक दफ़ा का रिकार्ड हुआ है।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए बैतुल माल से वज़ीफ़ा निर्धारित किया जाना उसके बारे में लिखा है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा मुंतख़ब हुए तो उनकी ज़रूरीयात को पूरा करने के लिए भी बैतुल माल से ही वज़ीफ़े का इंतेज़ाम किया गया। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो उन्होंने फ़रमाया कि मेरी क़ौम को इलम ही है कि मेरा पेशा ऐसा न था जिससे मैं अपने घर वालों की ख़ुराक मुहय्या नहीं कर सकता। मेरी आमदनी इतनी थी कि आराम से मैं घर चला रहा था मगर अब मैं मुस्लमानों के कामों में मशग़ूल हो गया हूँ। सो अबूबकर के अहल-ओ-अयाल अब बैत-उल-माल से खाएँगे और वे अर्थात अबू बकर मुस्लमानों के लिए इस माल में कारोबार करेगा और तिजारत से उनका माल बढ़ाता रहेगा।

(सही अल्बख़ारी, किताब अल् बियू, बाब कसब अर्रिजाल हदीस नम्बर : 2070)

इसलिए मुस्लमानों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए सालाना छः हज़ार दिरहम निर्धारित किए। कुछ कहते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उतना मंज़ूर किया था जितना आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़रूरत के लिए काफ़ी हो। आप पहले वाले थे अर्थात हुकूमत के सरबराह थे जिसकी रियाया ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के मसारिफ़ मंज़ूर किए।

(उद्धरित कामिल फ़िल तारीख़ लेइब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 272 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

एक रिवायत में इस तरह वर्णन मिलता है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा बनाए गए तो एक रोज़ सुबह के वक़्त आप बाज़ार की तरफ़ जा रहे थे। उनके कंधे पर वे कपड़े थे जिनकी वे तिजारत किया करते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हो मिले। उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह के ख़लीफ़ा! कहाँ का इरादा है? आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि बाज़ार जा रहा हूँ। उन्होंने कहा यह आप रज़ियल्लाहु अन्हो क्या करते हैं हालाँकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो मसलमानों के उमूर के वाली हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया तो मैं अपने अयाल को कहाँ से खिलाऊंगा। तो वे आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अपने साथ यह कह कर ले गए कि हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो का हिस्सा निर्धारित करते हैं।

(उद्धरित अल् तब्कातुल कुबरा, भाग 3, पृष्ठ 137 अबू बकर सिद्दीक़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

इसलिए सालाना तीन हज़ार दिरहम वज़ीफ़ा निर्धारित हुआ। बाअज़ रवायात के मुताबिक़ छः हज़ार दिरहम जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है वज़ीफ़ा निर्धारित हुआ और बाअज़ के मुताबिक़ पुरे ख़िलाफ़त के समय में छः हज़ार दिरहम दिए गए। इसी तरह सीरत की कुतुब में तक़रीबन सर्वसहमति से यह मिलता है कि जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बैतुल माल से अपनी और अहल-ओ-अयाल की ज़रूरीयात पूरी करने के लिए वज़ीफ़ा लिया लेकिन वफ़ात के वक़्त समस्त रकमें वापिस कर दीं। इसलिए एक रिवायत है कि जब आपकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आपने वसीयत फ़रमाई कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़मीन फ़रोख़्त करके इसकी क़ीमत से वे रक़म अदा की जाए जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बैतुल माल से अपने ज़ाती मसारिफ़ के लिए ली थी।

(अल् कामिल फ़िल तारीख़ लेइब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 272 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.) (तबक़ातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 143 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

एक और रिवायत में इस तरह वर्णन मिलता है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आपने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि जब से हम ख़लीफ़ा हुए हैं मैं ने क़ौम का कोई दीनार-ओ-दिरहम नहीं खाया बल्कि मामूली खाना और मोटा लिबास पहनता रहा

तथा मुस्लमानों के माल-ए-ग़नीमत में सिर्फ ये चीज़ें हैं; गुलाम, ऊंट और चादर। लिहाज़ा मेरे मरने के बाद इन तमाम चीज़ों को उम्र को भिजवा देना। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात हुई तो मैंने वे चीज़ें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास भेज दीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो चीज़ें देख के रोने लगे यहां तक कि उनके आँसू ज़मीन पर गिरने लगे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो यही फ़र्मा रहे थे कि अल्लाह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पर रहम फ़रमाए उन्होंने अपने बाद के लोगों को मशक़्क़त में डाल दिया। (अल् कामिल फ़िल तारीख़ लेइब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 271 मतबूआ दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वफ़ात पाई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने चंद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को बुला कर बैतुल माल का जायज़ा लिया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस में कोई चीज़ न दिरहम न दीनार पाया।

(तारीख़ ख़ुलफ़ा अज़ अल्लामा सियूती, पृष्ठ 64 दारुल क़ुतुब अरबी बेरूत 1999 ई.) कुछ भी नहीं था, ख़ाली था, सब तक़सीम कर दिया था।

क़ज़ा के विभाग का निज़ाम आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने जारी किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में जबकि महिकमा क़ज़ा को बाक़ायदा तौर पर मुनज़्ज़म नहीं किया गया था जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने क़ज़ा का महिकमा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द कर रखा था। (सय्यदना सिद्दीक़ अकबर अज़ अनुवादक पृष्ठ : 699)

एक रिवायत में वर्णन है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा हुए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ से अदालत की ख़िदमात अंजाम दूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो एक साल तक मुंतज़िर रहे परन्तु इस अरसा में कोई दो शख़्स भी आपके पास झगड़ा लेकर नहीं आए। (अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 351 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

कोई लड़ाई झगड़ा ही नहीं होता था। कोई मसायल नहीं पैदा होते थे। मुक़द्दमात की संख्या बहुत कम थी। अगर कोई मुक़द्दमा आ भी जाता तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद उसके लिए वक़्त निकाल लेते थे, ख़ुद ही हल कर दिया करते थे। महकमा क़ज़ा के सरबराह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो थे और आपकी मदद के लिए निमंलिखित अस्हाब थे : हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबी बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो , हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अबू नसर, अनुवादक पृष्ठ : 699-700)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि इस वक़्त अमन-ओ-अमान और दियानतदारी का यह आलम था कि महीना महीना गुज़र जाता और दो आदमी भी फ़ैसला कराने के लिए मेरे पास नहीं आते थे।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा लेइब्ने असद, भाग 3, पृष्ठ 137 अबू बकर सिद्दीक़, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

महकमा इफ़्ता के बारे में लिखा है कि नए-नए क़बायल और आबादियां हलक़ा इस्लाम में दाख़िल हो रही थीं और हालात के पेश-ए-नज़र बाअज़ नए-नए फ़िक़्ही मसायल भी पैदा हो रहे थे। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने आम मुस्लमानों की सहूलत और राहनुमाई के लिए महकमा इफ़्ता क़ायम किया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबी बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हो,हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़तवा देने पर निर्धारित किया क्योंकि यह हज़रात दीन के ज्ञान के बारे में और इलम-ओ-इजतिहाद के लिहाज़ से दूसरों से अलग औइर बढ़ कर थे। एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो भी फ़तवा देने वाले उन अस्हाब में शामिल थे। उनके इलावा किसी दूसरे को फ़तवा देने की इजाज़त नहीं थी।

(अशरा मुबशरा अज़ बशीर साजिद, पृष्ठ 182अल् बदर पब्लिकेशन लाहौर 2000 ई.)(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अबू नसर, अनुवादक पृष्ठ : 700)

एक इतिहासकार ने लिखा है किताबत, लिखने का जो महकमा था इसके बारे में लिखने वाला लिखता है कि अहद-ए-जदीद की इस्तलाह में कातिब को हुकूमत का सैक्रेटरी कहना चाहिए। अर्थात सैक्रेटरी जो नोटिस लेता है, मीटिंगज़ के मिनट्स (minutes)सुनाता है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में यह निज़ाम दीवान क़ायम नहीं हुआ था लेकिन सरकारी अहकाम की तहरीर, मुआहिदों की तर्कीम, उनको लिखना और दूसरे तहरीरी कामों के लिए कुछ हज़रात विशेष थे। किताबत की ख़िदमत पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अर्कम रज़ियल्लाहु अन्हो अहद-ए-नब्वी से मामूर थे। इसलिए अह्द सिद्दीक़ी में भी उनके सपुर्द यह ख़िदमत थी।

(सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ प्रोफ़ैसर अली मुहसिन सिद्दीक़ी, पृष्ठ 194 क़िरतास कराची 2002 ई.)

एक रिवायत के मुताबिक़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो ने किताबत का विभाग सँभाला था और बसा-औक़ात आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास मौजूद दीगर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो या हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु इस ज़िम्मेदारी को निभाते थे।

(अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 162 प्रकाशन दार इब्ने कसीर दमिशक़ बेरूत 2003 ई.)

फिर फ़ौज का महिकमा है। इस बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में कोई बाक़ायदा फ़ौजी निज़ाम नहीं था। जिहाद के वक़्त हर मुस्लमान मुजाहिद होता था। फ़ौज की तक़सीम क़बायल के अनुसार होती थी। हर क़बीले का अमीर अलग अलग होता था और उन सब पर अमीरुल ओमर का ओहदा होता था जो कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ईजाद थी।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अबू नसर अनुवादक, पृष्ठ : 701)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने सामान-ए-जंग की फ़राहमी के लिए यह इंतेज़ाम फ़रमाया था कि मुख़्तलिफ़ ज़राए से जो आमदनी होती थी उसका एक माक़ूल हिस्सा फ़ौजी अख़राजात के लिए अलैहदा निकाल लेते थे जिससे असलाह और बारबुर्दारी के जानवर ख़रीदे जाते थे। मज़ीद जिहाद के ऊंटों और घोड़ों की परवरिश के लिए कुछ चरागाहें विशेष कर दी थीं।

(कमांडर सहाबा अज़ अल्लामा मुहम्मद चिशती, पृष्ठ 87-88 प्रकाशन मुमताज़ अकैडमी उर्दू बाज़ार लाहौर)

एक सीरत निगार लिखता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की अस्करी हुकूमत का निज़ाम इस बदवी तरीक़ के ज़्यादा क़रीब था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अह्द से भी पहले क़बायल अरब में प्रचलित था। इस वक़्त हुकूमत के पास कोई बाक़ायदा मुनज़्ज़म लश्कर मौजूद नहीं था बल्कि हर शख़्स अपने तौर पर जंगी ख़िदमात के लिए अपने आपको पेश करता था। जब लड़ाई का ऐलान कर दिया जाता तो क़बायल हथियार लेकर निकल पड़ते और दुश्मन की जानिब कूच कर देते। सामान रसद और असलाह के लिए क़बायल मर्कज़ी हुकूमत की तरफ़ नहीं देखते थे बल्कि ख़ुद ही इन चीज़ों का इंतेज़ाम करते थे। हुकूमत की तरफ़ से उन्हें तनख़्वाह भी अदा नहीं की जाती थी बल्कि वे माल-ए-ग़नीमत ही को अपना हक़्क़ुल खिदमत समझते थे। मैदान-ए-जंग में जो माल-ए-ग़नीमत हासिल होता था उसका 4/5 हिस्सा जंग में हिस्सा लेने वालों के दरमयान तक़सीम कर दिया जाता था और पांचवां हिस्सा ख़लीफ़ा की ख़िदमत में दारुल हकूमत में अरसाल कर दिया जाता था जिसे वे बैतुल माल में जमा कर देता था। ख़ुमस के ज़रीया से सलतनत के मामूली मसारिफ़ पूरे किए जाते थे।

(उद्धरित अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवादक पृष्ठ 456-457 मतबूआ इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

जंगों में सिपहसालार -ए- जंग को, जो जंगों के अमीरुल ओमरा बनाए जाते थे, उनको हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जंग के बारे में जो हिदायात दीं, उनके विषय में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जंग पर जाने वाले सिपहसालारों और कमांडरों को भी हिदायात देते थे।

हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो के लश्कर को ख़िताब फ़रमाते हुए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मैं तुम को दस बातों की नसीहत करता हूँ।

तुम ख़ियानत न करना और माल-ए-ग़नीमत से चोरी न करना। तुम वादा न तोड़ना और मुसला न करना और किसी छोटे बच्चे को क़तल न करना और न किसी बूढ़े को और न ही किसी औरत को और न खजूर के दरख़्त काटना और न उसको जलाना और न किसी फलदार दरख़्त को काटना। न तुम किसी बकरी गाय और ऊंट को ज़बह करना सिवाए खाने के लिए। जब ज़रूरत हो करो, नहीं तो नहीं। और तुम कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रोगे जिन्हों ने अपने आपको गिरजों में वक़्फ़ कर रखा

है। अतः तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ देना उन्हें कुछ नहीं कहना जो राहिब हैं। और तुम ऐसे लोगों के पास जाओगे जो तुम्हें मुख़्तलिफ़ किस्म के खाने बर्तनों में पेश करेंगे। तुम उन पर अल्लाह का नाम लेकर खाना। और तुम्हें ऐसे लोग मिलेंगे जो अपने सिर के बाल दरमयान से साफ़ किए होंगे और चारों तरफ़ पट्टीयों की मानिंद बाल छोड़े होंगे तो तलवार से उनकी ख़बर लेना क्योंकि ये लोग मुस्लमानों के ख़िलाफ़ भड़काने वाले और जंगें करने वाले लोग हैं। अल्लाह के नाम से रवाना हो जाओ। अल्लाह तुम्हें हर किस्म के ज़ख़्म से और हर किस्म की बीमारी और ताऊन से महफ़ूज़ रखे।

(तारीख़ अल् तिब्री लॉबी जाफ़र मुहम्मद बिन तबरी, भाग 2, पृष्ठ 246 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

इसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत यज़ीद बिन अबूसुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हो को शाम की जंग के लिए भेजते हुए फ़रमाया। इस का ज़िक्र में पहले भी पिछले ख़ुतबा में कर चुका हूँ। कुछ अहम बातों का ख़ुलासा दुबारा बयान कर देता हूँ। यह बड़ी ज़रूरी बातें हैं। याद रखने वाली हैं। हर ओहदेदार के लिए याद रखने वाली हैं।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं ने तुम्हें वाली निर्धारित किया ताकि तुम्हें आज़माऊं। तुम्हारा तजुर्बा करूँ और तुम्हें बाहर निकाल कर तुम्हारी तर्बीयत करूँ। अगर तुमने अपने फ़रायज़ बहुत अच्छे से अदा किए तो तुम्हें दुबारा तुम्हारे काम पर निर्धारित करूँगा और तुम्हें मज़ीद तरक़्क़ी दूँगा और अगर तुम ने कोताही की तो तुम्हें स्थगित कर दूँगा। अल्लाह के तक़्वा को तुम लाज़िम पकड़ो। वह तुम्हारे बातिन को इसी तरह देखता है जिस तरह ज़ाहिर को देखता है। लोगों में ख़ुदा के ज़्यादा क़रीब वह है जो अल्लाह से दोस्ती का सबसे बढ़कर हक़ अदा करने वाला है और लोगों में सबसे ज़्यादा अल्लाह के क़रीब वह शख़्स है जो अपने अमल के ज़रीया सबसे ज़्यादा इस से क़ुरबत हासिल करे। फिर फ़रमाया। उद्दंडता द्वेष से बचना। अल्लाह को ये बातें इंतेहाई नापसंद हैं। फिर फ़रमाया तुम अपने लश्कर के साथ अच्छा बरताव करना। उनके साथ ख़ैर से पेश आना। जब उन्हें वाज़-ओ-नसीहत करना तो संक्षिप्त करना क्योंकि बहुत ज़्यादा गुफ़्तगु बहुत सी बातों को भुला देती है। तुम अपने नफ़्स को दुरुस्त रखो लोग तुम्हारे लिए दुरुस्त हो जाऐंगे। लीडर अपने दुरुस्त रखें ।ओहदेदार अपनी हालत दुरुस्त रखें तो लोग ख़ुद बख़ुद दुरुस्त हो जाते हैं। और नमाज़ों को उनके औक़ात पर रुकू और सुजूद को मुकम्मल करते हुए अदा करना। नमाज़ों की पाबंदी बड़ी ज़रूरी है।

फिर फ़रमाया कि जब दुश्मन के सफ़ीर तुम्हारे पास आएं तो उनका इकराम करना, इज़्ज़त करना। उन्हें बहुत कम ठहराना। तुम्हारे पास ज़्यादा देर न ठहरें और वे तुम्हारे लश्कर से जल्द निकल जाएं। लश्कर में ज़्यादा देर न रहें जल्दी निकल जाएं ताकि वे इस लश्कर के बारे में कुछ जान न सकें। उनको अपने कामों के बारे में अवगत न करना। बड़ी मुख़्तसर बातें बताना। फ़रमाया कि अपने लोगों को उनसे बात करने से रोक देना। हर एक को इन सफ़ीरों से मिलने न देना। ये नहीं कि जहां चाहें वे चले जाएं और मिलते चले जाएं। नहीं। यह केवल जिनसे मिलना है जिनसे बात करनी है उनसे बात करें। वे अवाम में न घुस जाएं। जब तुम ख़ुद उनसे बात करो तो अपने भेद को ज़ाहिर न करना। ख़ुद भी सफ़ीरों से बड़ी एहतेयात से बात करना। फिर मश्वरा के बारे में बताया कि जब तुम किसी से मश्वरा लेना तो बात सच कहना, सही मश्वरा मिलेगा। सारी बात बता के फिर मश्वरा लेना। मुशीर से अपनी ख़बर मत छुपाना वर्ना तुम्हारी वजह से तुम्हें नुक़्सान पहुँचेगा। सारे दिन की मालूमात हासिल करने के बारे में कि किस तरह मालूमात हासिल की जाएं। किस तरह ओहदेदार को, लीडर को, कमांडर को इन्फ़ार्मेशन मालूम हो तो फ़रमाया कि रात के वक़्त अपने दोस्तों से बातें करो। शाम के वक़्त बैठो उनमें से लोग चुनो उनसे बातें करो तुम्हें ख़बरें मिल जाएँगी। अक्सर बग़ैर इत्तिला दिए ही अचानक उनकी चौकियों का अध्यन करना। निगरानी भी ज़रूरी है। जिसे अपनी हिफ़ाज़त गाह से ग़ाफ़िल पाओ उसकी अच्छी तरह तादीब करना। फिर फ़रमाया कि सज़ा देने में जल्दी न करना और न बिल्कुल नज़रअंदाज करना। दोनों चीज़ें ज़रूरी हैं। न सज़ा देने में, फ़ैसला करने में जल्द-बाज़ी करनी है न यह कि बिल्कुल ग़ाफ़िल हो जाओ कुछ कहो ही न। अपनी फ़ौज से ग़ाफ़िल न रहना। उनकी जासूसी करके उनको रुस्वा न करना। हर वक़्त जुस्तजू, अपने लोगों की जासूसी न करते रहना क्योंकि इस तरह उनकी रुस्वाई होती है। उनके राज़ की बातें लोगों से न वर्णन करना। जो राज़ तुम्हें पता लगे किसी और से न बयान करना। बेकार किस्म के लोगों के साथ मत बैठना। सच्चे और वफ़ादार लोगों के साथ बैठा करना। बुज़दिल न बनना अन्यथा लोग भी बुज़दिल हो जाऐंगे। माल-ए-ग़नीमत में ख़यानत से बचना। यह मोहताजी से क़रीब करती है और फ़तह और नुसरत को रोकती है।

(अल् कामिल फ़िल तारीख़, जल्द 2 पृष्ठ 253-254 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

ये बहुत सी बातें हैं जो मैंने नई वर्णन कीं। उनमें से बाअज़ बातें जैसा कि मैंने पहले कहा इलावा फ़ौजी अफ़सरों के हमारे ओहदे दारों के लिए भी ज़रूरी हैं जिसका उन्हें ख़्याल रखना चाहिए तभी काम में बरकत पड़ेगी। यह ख़ुलासा में दुबारा जैसा कि पहले कहा है इसलिए वर्णन कर रहा हूँ ताकि ओहदेदारों को याद रहे।

इस्लामी हुकूमत की मुख़्तलिफ़ रियास्तों में तक़सीम के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के अहद-ए-ख़िलाफ़त में बिलाद-ए-इस्लामिया को मुख़्तलिफ़ रियास्तों में तक़सीम किया गया। इन रियास्तों में आपने उमरा और गवर्नर निर्धारित किए। मदीना उनका दारुल खिलाफ़ा था। यहां हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बहैसीयत ख़लीफ़ा थे।

(ख़ुलासा अज़ अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी, पृष्ठ 176-180-181 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बिन कसीर दमिशक़ बेरूत 2003 ई.)

अमाल निर्धारित करने के तरीक़ के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का तरीक़-ए-कार यह था कि आप नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करते हुए किसी क़ौम पर गवर्नर निर्धारित करते हुए इस बात का ख़्याल रखते कि अगर इस क़ौम के अफ़राद में नेक और सालेह अफ़राद होते तो इन्ही में से गवर्नर निर्धारित फ़रमाते।

तायफ और बाअज़ अन्य क़बायल पर इन्ही में से गवर्नर निर्धारित फ़रमाया और जब आप किसी शख़्स को बहैसीयत गवर्नर निर्धारित करते तो उस इलाक़े पर उस की गवर्नरी का अहदनामा तहरीर करा देते और अक्सर औक़ात उस इलाक़े तक पहुंचने का रास्ता भी उसके लिए निर्धारित फ़र्मा देते। और इस में इन मुक़ामात का वर्णन करते जहां से उनको गुज़रना होता था। विशेषता जब यह तक़र्रुरी इन इलाक़ों से मुताल्लिक़ होती जो अभी फ़तह नहीं हुए होते थे और इस्लामी ख़िलाफ़त के कंट्रोल से बाहर होते। फ़ुतूहात शाम और इराक़ और मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ जंगों में ये चीज़ें बिल्कुल नुमायां नज़र आतीं और बसा-औक़ात आप बाअज़ रियास्तों को दूसरों के साथ ज़म कर देते, ख़ासकर मुर्तद होने वालों से क़िताल के बाद यह अमल में आया। इसलिए हज़रत ज़ियाद बिन लबीद रज़ियल्लाहु अन्हो जो हज़र मौत के गवर्नर थे उनकी निगरानी में किनदा को भी शामिल कर दिया और इसके बाद वे हज़र मौत और किनदा दोनों के गवर्नर रहे।

(अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ डाक्टर अली मुहम्मद पृष्ठ 179 प्रकाशन दार इब्ने कसीर दमिशक़ बेरूत 2003 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर में आमेलीन के इंतेख़ाब में अव्लियते इस्लाम को देखा जाता तथा ऐसे शख़्स को निर्धारित किया जाता जो दरसगा-ए-नबुव्वत से तर्बीयत याफ़ताह हो। जिनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत मिली हो उनको आमिल निर्धारित किया जाता। पहली preference वह थी, पहली तर्जीह वह थी। इस सिलसिला में आप रज़ियल्लाहु अन्हो का मयार यह था कि जिस शख़्स को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिस काम के लिए निर्धारित फ़र्मा गए थे आप इस में हरगिज़ रद्द-ओ-बदल न फ़रमाते थे। उदाहरण हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो को लश्कर का अमीर निर्धारित फ़रमाया था। बाद में कुछ लोगों ने मस्लिहत के पेश-ए-नज़र किसी बुज़ुर्ग सहाबी को इस ओहदे पर मुतमक्किन करने का मश्वरा दिया लेकिन आपने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो को ही बरक़रार रखा। इसी तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हो भी देखते थे कि किस शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़्यादा फ़ैज़ हासिल किया है। यही वजह है कि आप अक्सर-ओ-बेशतर मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ उन लोगों के सपुर्द किया करते थे जो फ़तह मक्का से क़बल मुस्लमान हुए थे। इस सिलसिला में आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी क़बायली असबीयत या अक़्रिबा नवाज़ी का रवैय्या इख़्तेयार नहीं किया। इसी सख़्त उसूल और बुलंद मयारी का नतीजा था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो के निर्धारित करदा उम्माल और हुक्काम ने हमेशा अपनी बेहतरीन सलाहियतें इस्लाम और मुस्लमानों की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल कीं।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो از ابوالنصر مترجم पृष्ठ : 693)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो उम्मालकी तक़र्रुरी में अहले इलाक़ा की राय का भी एहतेराम करते थे इसलिए हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हो अहद-ए-नब्वी में बहरीन के गवर्नर रहे। बाद में किसी वजह से उनको वहां से

कहीं और भिजवा दिया गया। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में अहल-ए-बहरीन ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को दरख़ास्त की कि हज़रत अला रज़ियल्लाहु अन्हो को उनके पास वापस भिजवा दिया जाए तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हो को बेहरीन का गवर्नर बना कर उनके पास भिजवा दिया।

(उद्धरित फ़ुतूहुल बुल्दान लिलबेज़ारी पृष्ठ 131 अनुवादक प्रकाशन नफ़ीस अकैडमी कराची)

आमेलीन को भी आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिदायात दीं। इस के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हुक्काम के तक़र्रुर के अवसर पर ख़ुद हिदायात देते थे इसलिए तारीख़ तिबरी में है कि अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो और वलीद बिन अक़बह रज़ियल्लाहु अन्हो को नसीहत करते हुए फ़रमाया ज़ाहिर-ओ-बातिन में ख़ुदा से डरते रहो। जो शख़्स अल्लाह से डरता है वह उसके लिए रिहाई का रास्ता पैदा कर देता है और उस को ऐसे ज़रीया से रिज़्क़ देता है जहां से मिलने का उस को गुमान भी नहीं होता। जो अल्लाह तआला से डरता है वह उसके गुनाह माफ़ कर देता है अर्थात अल्लाह उसके गुनाह माफ़ कर देता है और उसको बढ़ा कर अज्र देता है। ख़ुदा तआला का तक़्वा इख़्तेयार करना इन सब में बेहतर है जिसकी ख़ुदा तआला के बंदे एक दूसरे को तलक़ीन करते हैं। तुम ख़ुदा के रास्तों में से एक रास्ते पर जा रहे हो इसलिए जो अमर तुम्हारे दीन की क़ुव्वत और तुम्हारी हुकूमत की हिफ़ाज़त का माध्यम हो इस में तुम्हारा कोताही करना नाक़ाबिल-ए-माफ़ी जुर्म है। अतः तुम्हारी तरफ़ से सुस्ती और ग़फ़लत हरगिज़ नहीं होनी चाहिए।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 332 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत मुसतोरिद बिन शदाद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स हमारा आमिल हो वह एक बीवी रख ले और अगर उसके पास ख़ादिम न हो तो वे एक ख़ादिम रख ले। अगर उसके पास रिहायश के लिए मकान न हो तो रिहायश के लिए एक मकान रख ले। मस्तोरद ने कहा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया जो शख़्स उन इश्याय के इलावा कुछ भी ले तो वे ख़ायन है या फ़रमाया कि वह चोर है।

(सुंन अबी दाऊद, किताब الخراج والامارہوالفیٔ،, باب فی ارزاق العمال हदीस 2945)

अमाल का मुहासिबा किस तरह होता था? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उम्माल और हुक्काम की एक एक हरकत पर नज़र रखते थे। चूँकि ये लोग आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैज़ सोहबत हासिल कर चुके थे इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विपरीत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उनकी मामूली भूल चौक से दरगुज़र फ़रमाते थे। नज़र रखते थे कि क्या कर रहे हैं लेकिन मामूली बातों को दरगुज़र फ़रमाते थे। तारीख़ तिबरी में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने अमाल और आदमियों को क़ैद नहीं करते थे लेकिन जब कोई सख़्त ग़लती करता तो आप उसको मुनासिब उपदेश ज़रूर फ़रमाते थे ख़ाह वह ओहदे के एतबार से कितना बड़ा क्यों न हो। हज़रत मुहाजिर बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में आपको मालूम हुआ कि उन्होंने एक ऐसी औरत के दाँत उखड़वा दिए हैं जो मुस्लमानों की निंदा करती है तो इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौरन हज़रत महाजिर रज़ियल्लाहु अन्हो को सरज़निश का ख़त लिखा। यहाँ तक कि अगर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो की किसी कोताही का इलम होता तो आप उनको भी सरज़निश करने में देरी न फ़रमाते।

(सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ अनुवादक पृष्ठ : 695)

उमरा-ए-और गवर्नरों की ज़िम्मेदारियों के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुख़्तलिफ़ इलाक़ों, शहरों और क़स्बों में जो गवर्नर और उमरा-ए-निर्धारित किए थे उनकी मुख़्तलिफ़ ज़िम्मेदारियाँ और डयूटीयाँ लगाई गई थीं। उमरा और उनके नायबीन की माली ज़िम्मेदारियाँ भी थीं। वे अपने-अपने इलाक़े में इलाक़े के दौलतमंदों से ज़कात वसूल करके गरीबों में तक़सीम करते थे और ग़ैर मुस्लिमों से टैक्स लेकर बैतुल माल में जमा कराते थे। उनकी ये ज़िम्मेदारी अहद-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से चली आ रही थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहद में होने वाले मुआहिदों की तजदीद की गई। नजरान के वाली ने रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अहले नजरान के मध्य किए गए मुआहिदे की तजदीद की थी क्योंकि अहल-ए-नजरान के ईसाइयों ने इसका मुतालिबा किया था। उमरा अपने अपने इलाक़ों में लोगों को दीनी तालीम देने और इस्लाम की तब्लीग़ और दावत और नशर-ओ-इशाअत में भरपूर किरदार अदा करते थे। उनमें से अक्सर मसाजिद में हलक़ा बना कर लोगों को क़ुरआन और इस्लामी अहकाम और आदाब सिखाते थे। वे ऐसा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी में करते थे। यह ज़िम्मेदारी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके ख़लीफ़ा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की नज़र में सबसे अहम शुमार होती थी। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के उमरा और गवर्नरों ने इस ज़िम्मेदारी को ख़ूब निभाया और अच्छी तरह निभाया यहाँ तक कि एक इतिहासकार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के हज़र मोत में निर्धारित करदा अमीर ज़याद बिन लबीद के बारे में लिखता है कि जब सुबह होती तो ज़याद लोगों को क़ुरआन पढ़ाने के लिए तशरीफ़ ले आते जैसा कि वह अमीर बनने से पहले क़ुरआन पढ़ाने आया करते थे। इसी तरह तालीम और तर्बीयत के ज़रीया से उन उमरा ने अपने इलाक़ों में इस्लाम की नशर-ओ-इशाअत में बड़ा अहम किरदार अदा किया।

मफ़्तूहा इलाक़ों और मुर्तद और बाग़ी हो जाने वाले इलाक़ों में इसी तालीम के बदौलत इस्लाम मज़बूत हुआ। ऐसे इलाक़े जहां उनके बासी नए-नए मुस्लमान हुए थे और दीनी अहकाम से बे-ख़बर थे इन इलाक़ों में इस तालीम का अच्छा ख़ासा नतीजा बरामद हुआ जबकि इस्लाम के मज़बूत केंद्र उदाहरणतः मक्का मुकर्रमा, तायफ और मदीना मुनव्वरा में भी ऐसे मोअल्ल्मीन निर्धारित थे जो लोगों की तालीम-ओ-तर्बीयत का एहतेमाम करते थे। ये सब कुछ इसके ख़लीफ़ा या अमीर के हुक्म पर होता था या जिन्हें ख़लीफ़ा खासतौर पर मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में तालीम के लिए मुतय्यन करता था वे यह फ़रीज़ा सरअंजाम देते थे। इलाक़े का अमीर या गवर्नर अपने सूबे के इंतेज़ामी उमूर का बराह-ए-रस्त ज़िम्मेदार होता था। अगर उसे किसी सफ़र पर जाना होता तो वह अपना नायब निर्धारित करता था जो कि उसकी वापसी तक इंतेज़ामी उमूर की निगरानी करता था। उसकी मिसाल यह है कि हज़रत मुहाजिर बिन अबी अमय को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुंदा का गवर्नर निर्धारित फ़रमाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी उन्हें इसी ओहदे पर बरक़रार रखा। मुहाजिर अपनी बीमारी की वजह से यमन नहीं जा सके वे मदीना में रुक गए और अपनी जगह ज़ियाद बिन लबीद को रवाना किया कि उनकी शिफ़ा याबी और यमन तशरीफ़ आवरी तक उनके फ़रायज़ अंजाम दिए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बात की इजाज़त दे दी। इसी तरह इराक़ की गवर्नरी के दौरान हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो ही में अपनी वापसी तक अपना नायब निर्धारित कर देते थे। (हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़िंदगी के सुनहरे वाक़ियात, अब्दुल मालिक से पृष्ठ 189-188 मकतबा दारुल सलाम रियाज़)

यह वर्णन चल रहा है इंशा अल्लाह तआला आइन्दा भी वर्णन होगा।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR

Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affiliated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AICCE-0289/Raj.

पृष्ठ 02 का शेष बड़ी मुश्किल से अपनी भावनाओं का प्रकटन किया कहने लगे मेरी आयु 56 वर्ष है। मैं अपनी जीवन में पहली बार किसी भी ख़लीफ़तुल मसीह से मिला हूँ। निरन्तर रो रहे थे और उनसे बात नहीं हो रही थी।

जो भी मुलाक़ात करके बाहर आता। आँखों में ख़ुशी-ओ-मुसर्रत के आँसू लिए हुए आता और ऐसी जज़बाती कैफ़ीयत होती कि बात करनी मुश्किल होती।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम आठ बज कर 40 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

समारोह

साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में पधारे जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का समारोह आयोजित हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक निमंलिखित बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन-ए-करीम की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

निमंलिखित ख़ुशनसीब बच्चे और बच्चियां इस समारोह में शामिल हुए प्रिय अताउल बाकी कल्ला एतेज़ाज़ बशीर मलिक, वलीद अहमद मिन्हास, तलहा मिन्हास। जाज़िब अहमद, ज़ोरान ख़ान झटोल, एकान् अहमद बट, क़दीम अहमद असलम, शाहरुख मुमताज़ मलिक, कामरान अहमद, शायान फ़ैसल, फ़ारान अहमद, अरीब अहमद ताहेर, रोहाब अहमद।

प्रिय वसीमा एहसान, अम्तुल सबुह, मलायका आरिफ़ सबाहत ख़ालिद, लायबा अहमद, राय नौशाबा, अम्तुल मुकीत,सूरः मोमिन, युसरा जट, आतफ़ा यासीन, समरीन अहमद, आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

12 जून 2014 शुक्रवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही।

जलसा सालाना के इंतेज़ामात का निरीक्षण।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई।

प्रोग्राम के अनुसार आज जलसा गाह Karlsruhe के लिए प्रस्थान था। पाँच बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे और दुआ करवाई। इसके बाद Karlsruhe के लिए प्रस्थान हुआ।

बेतुल-सबूह फ्रैंकफ़र्ट से Karlsruhe की दूरी 160 किलोमीटर है। यह जगह जहां जलसा सालाना आयोजित होना होता है K. Messe कहलाती है। इस का कुल रकबा एक लाख 50 हज़ार मुरब्बा मीटर है। और इसका Covered हिस्सा 70 हज़ार मुरब्बा मीटर है। इस में चार बड़े हाल हैं और ये चारों हाल एयर कंडीशनर हैं। प्रत्येक हाल का रकबा 1250 मुरब्बा मीटर है। प्रत्येक हाल में कुर्सीयों पर 12 हज़ार लोग बैठ सकते हैं। और प्रत्येक हाल में 18 हज़ार से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। संपूर्णता इन चारों हालों से मुल्हिक़ 128 शौचालय हैं। यहां दस हज़ार गाड़ियों की पार्किंग की जगह उपस्थित है।

यहां इस वर्ष नैशनल और इंटरनैशनल नुमाइशें और अन्य प्रोग्राम होते हैं और दुनिया-भर की विभिन्न कंपनीयां हिस्सा लेती हैं।

Karlsruhe शहर में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत क़ायम है। और इस शहर के इर्द-गिर्द 50 किलोमीटर के अंदर-अंदर 12 बड़ी जमाअतें हैं। लगभग एक घंटा 50 मिनट के यात्रा के बाद सात बज कर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जलसा गाह में तशरीफ़ आवरी हुई। आदरणीय हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद इमरान साहब अफ़्सर जलसा सालाना जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को स्वागतम कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। कार्यकर्ताओं ने बड़े जोश और वलवले से नारे लगाए।

इसके बाद जलसा सालाना के इंतेज़ामात का निरीक्षण शुरू हुआ।

जलसा सालाना की तैयारी और इंतेज़ामात के लिए वक़ारे अमल का आरंभ 7 जून शनिवार के दिन को हुआ जो आज 12 जून शुक्रवार के दिन तक जारी रहा और लगभग 800 ख़ुद्दाम-ओ-अंसार ने इस वक़ारे अमल में हिस्सा लिया। वक़ारे अमल के माध्यम से पुरुषों के जलसा गाह की मुकम्मल तैयारी, हाल नंबर 3 में खाने, रिहायश और कुछ दफ़ातर की तैयारी, बाहरी क्षेत्र में लंगर ख़ाना, चूल्हों की तंसीब, बिजली का काम, देग़ों की सफ़ाई का प्रबन्ध, बाज़ार, स्टोर, लंगर ख़ाना, पार्किंग का प्रबन्ध और अन्य दफ़ातर की तैयारी और विभागों की तैयारी, M.T.A स्टूडियो की तैयारी और तिब्बी इमदाद के दफ़ातिर तैयार किए गए।

इसी तरह वक़ारे अमल के माध्यम 4.8 किलोमीटर बड़े साइज़ की Fence लगाई गई और 4.5 किलोमीटर छोटे साइज़ की Fence लगाई गई इसके अतिरिक्त महिलाओं के जलसा गाह की तैयारी, बच्चों वाली महिलाओं के लिए अलग-अलग जलसा गाह की तैयारी, महिलाओं की रिहायश और खाने की जगह की तैयारी, लजना के हाल और दफ़ातिर की तैयारी ये सब काम भी वक़ारे ए अमल के माध्यम से हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निरीक्षण का आरंभ विभाग रजिस्ट्रेशन और कार्ड चैकिंग सिस्टम से किया। जूंही कार्ड स्कैन Scan होता है उस व्यक्ति की तस्वीर और अन्य समस्त कवायफ़ स्क्रीन पर आजाते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने इस विभाग के मुंतज़िम से इस तरीक़-ए-कार के बारे में कुछ मामलों भी दरयाफ़्त फ़रमाए। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तर जलसा सालाना, दफ़्तर अफ़्सर जलसा गाह और दफ़्तर अफ़्सर ख़िदमत-ए-ख़लक़ का निरीक्षण फ़रमाया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभाग एम.टी.ए. में तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर अनवर विभाग एम टी.ए के तहत क़ायम विभाग फोटोग्राफी के तैयार करदा काऊँटर पर पधारे। हुज़ूर अनवर ने काउंटर पर लगी हुईस्क्रीन पर www.makhzan-e-tasaweer.de का उद्घाटन फ़रमाया इस नए वैब साईट को हुज़ूर अनवर की दुआओं से वर्तमान में जर्मनी जमाअत की तारीख़ तसावीर की सूरत में सुरक्षित करने के लिए क़ायम किया गया है और अब तक दो हज़ार तसावीर इस वैब साईट पर Load की जा चुकी हैं और चौदह हज़ार तारीख़ी तसावीर को डीजटल सूरत में स्कैन किया जा चुका है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर विभाग एम.टी.ए. जर्मन स्टूडियो की Editing ऑफ़िस डिपार्टमैंट में पधारे और निरीक्षण फ़रमाया। इस जलसा सालाना के लिए नई तैयार शुदा Main Animation स्क्रीन पर दिखाई गई जो Live प्रसारण के लिए चलाई जाएगी।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने कंट्रोल रुम का निरीक्षण फ़रमाया और इस वर्ष उसकी जगह की बदलाव के बारे में पूछने फ़रमाया। इस वर्ष कंट्रोल रुम में हाल से बाहर होने और गर्मी की शिद्दत से बचाओ के लिए तीन अदद बड़े एयर कंडीशन लगे हुए हैं। इसके बाद हुज़ूर अनवर ने जलसा सालाना के Live प्रसारण के लिए तैयार किए गए दो अस्थाई स्टूडियोज़ का निरीक्षण फ़रमाया। उनमें से एक स्टूडियो एम.टी.ए. के चैनल नंबर 2 और 3के लिए है और दूसरा स्टूडियो Web Streem के माध्यम जर्मन भाषा के समस्त प्रोग्राम प्रसारित करने के लिए है। ये दोनों स्टूडियो एक ही समय में काम करेंगे।

वैब स्ट्रीम के माध्यम जो प्रसारण होंगी इससे जर्मनी के अतिरिक्त स्विट्ज़रलैंड और ऑस्ट्रिया के लोगों भी लाभ उठा सकेंगे जो जर्मन भाषा बोलते हैं।

एम.टी.ए. के विभिन्न विभागों के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विभाग ट्रांसलेशन का जायज़ा लिया। हुज़ूर अनवर की सेवा में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई कि यहां स्थानीय तौर पर ग्यारह भाषाओं में अनुवाद

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
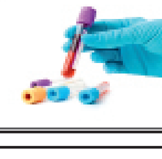
चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

का प्रबन्ध किया गया है जिनमें जर्मन, अंग्रेज़ी, फ्रैंच, टर्किश, अरबक, बुल्गारियन, अल्बानियन, बोसनेन्, रशियन, फ़ारसी, और बंगला शामिल हैं।

उनमें से अरबी, फ्रैंच और बंगला भाषा के अनुवाद यहां से Live एम.टी.ए. इंटरनैशनल पर प्रसारित होंगे।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने विभाग ह्यूमैनिटी फ़रस्ट का निरीक्षण फ़रमाया और उनके काम के सिलसिला में विभिन्न मामलों के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया।

"ह्यूमैनिटी फ़रस्ट जर्मनी" ने अपने नाम के साथ विभिन्न चीज़ों तैयार की हुई हैं। ये चीज़ों बराए फ़रोख़्त रखी हुई थीं। मुंतज़मीन ने ये समस्त चीज़ों एक बैग में डाल कर हुज़ूर अनवर की सेवा में भेंट प्रस्तुत कीं। जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक इन चीज़ों की क़ीमत दरयाफ़्त फ़रमाई और उसी समय नक़द अदायगी फ़रमाई और ये बैग ख़रीद लिया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने विभाग तब्लीग़ के तहत लगाई जाने वाली नुमाइश का निरीक्षण फ़रमाया। ये नुमाइश क़ुरआन-ए-करीम, इस्लाम और जमाअत अहमदिया के परिचय इत्यादि के बारे में है। इस नुमाइश में कुछ नए Features शामिल किए गए हैं। जिनमें विशेषता Touch Screens शामिल थीं। इन स्क्रीन पर इस्लाम अहमदियत का परिचय प्रस्तुत किया गया था और जमाअत अहमदिया की तारीख़ भी प्रस्तुत की गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रोग्राम के विभिन्न हिस्से देखे।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभाग वसाया, सनअतो तिजारत, वक़्फ़-ए-जदीद , समी ओ बसरी और विभाग तालीमुल क़ुरआन वक़्फ़-ए-आरज़ी के दफ़ातिर के पास से गुज़रते हुए बुक स्टॉल और बुक स्टोर पर तशरीफ़ ले आए और तफ़सील के साथ निरीक्षण फ़रमाया। यहां बड़ी तर्तीब के साथ मेज़ों और विभिन्न स्टैंडज़ पर पुस्तकें रखी गई थीं ताकि पुस्तकें प्राप्त करने वाले बाआसानी अपनी मतलूबा पुस्तक प्राप्त सकें।

हुज़ूर अनवर ने नैशनल सेक्रेटरी प्रकाशन को हिदायत फ़रमाई कि ख़ुतबात-ए-ताहेर, ख़ुतबात-ए-मसरूर और अनवारुल ऊलूम की मज़ीद नई जिल्दें भी प्रकाशित हो चुकी हैं वह भी क़ादियान से मंगवाईं ताकि ये सब सेट मुकम्मल हों। इसी तरह मज़ीद जो नई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं वे भी मंगवाईं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभाग रिश्ता नाता से होते हुए जामिया अहमदिया जर्मनी के विभाग में तशरीफ़ ले आए। यहां जामिया अहमदिया के समस्त प्रोग्राम और Activities को तसावीर में प्रकट किया गया था।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जायदाद विभाग का निरीक्षण फ़रमाया उस विभाग के माध्यम से जर्मनी में बनने वाली मस्जिदों की तसावीर मुख़्तसर कवायफ़ के साथ प्रस्तुत की गई थीं और अन्य निर्माण भी दिखाए गए थे। नींव का पत्थर और मस्जिदें के उद्घाटन के अवसर की तसावीर भी आवेज़ां की गई थीं। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस हाल में तशरीफ़ ले आए जहां विभाग तब्लीग़ के तहत बाहरी देशों से आने वाले मेहमानों की रिहायश और तमाम का प्रबन्ध किया गया था और मेहमानों के लिए बड़ी संख्या में बिस्तर बिछाए गए थे। इस रिहायशी हिस्सा के साथ ही इन मेहमानों के लिए खाने के इंतेज़ामात किए गए थे और बड़ी तर्तीब के साथ खाना खाने के लिए मेज़ और कुर्सियाँ लगाई गई थीं और प्रत्येक मेज़ पर मशरूबात और अन्य आवश्यकता की चीज़ों उपस्थित थीं। साथ ही Buffet सिस्टम में खाना लगा हुआ था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नान से एक लुक़्मा लेकर तनावुल फ़रमाया और नान के मयार का जायज़ा लिया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस हाल में तशरीफ़ ले गए जहां जलसा के मेहमानों के लिए खाना खाने का प्रबन्ध कियागया था। इस प्रबन्ध के तहत एक समय में हज़ारों लोग खाना खा सकते हैं। मेज़ों पर ही बड़ी संख्या में पानी की बोतलें और गिलास इत्यादि रखे गए थे ताकि खाने के समय पानी सामने ही उपस्थित हो। शाम का खाना तैयार हो कर इस हाल में आ चुका था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने खाने के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया और इसके मयार का जायज़ा लिया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्टोर में तशरीफ़ ले आए जहां खाने पीने और प्रयोग की विभिन्न चीज़ों स्टोर की गई थीं। यहां से आवश्यकता के अनुसार साथ-साथ ये चीज़ों विभिन्न विभागों को प्रदान की जाती हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लंगर ख़ाना का निरीक्षण फ़रमाया।

हुज़ूर अनवर पहले इस विभाग में तशरीफ़ ले गए जहां गोश्त काटा और तैयार किया जाता है। हुज़ूर अनवर ने कटा हुआ गोश्त देखा और इस को काटने के हवाला से कार्यकर्ताओं से बातचीत फ़रमाई और हिदायात भी दीं कि गोश्त काटने के बाद इसको बाहर न रखें बल्कि जल्दी Refrigerator में रखें।

हुज़ूर अनवर ने लंगर ख़ाना के निरीक्षण के इस समस्त इंतिज़ामात का जायज़ा लिया। और खाने के मयार के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया और मुंतज़मीन से बातचीत फ़रमाई आलू गोश्त का सालन और दाल तैयार की गई थी। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक आलू गोश्त और दाल दोनों से एक एक लुक़्मा तनावुल फ़रमाया और फ़रमाया कि दाल ज़्यादा बेहतर पक्की हुई है। आलू गोश्त में अभी कुछ कमी है देग में से एक बोटी और आलू लेकर चैक किया करें। लंगर ख़ाना के कार्यकर्ताओं ने एक बड़े साइज़ का केक तैयार किया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक अपने इन ख़ुद्दाम के लिए केक के विभिन्न हिस्से किए।

लंगर ख़ाना के समस्त कार्यकर्ताओं ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने की भी सआदत पाई।

लंगर ख़ाना से बाहर "देग वाशिंग मशीन" लगाई गई थी। ये मशीन पिछली आठ वर्षों से लगाई जा रही है और प्रत्येक वर्ष इस मशीन में तकनीकी दृष्टि से बेहतरी लाई जाती है। इस मशीन को तीन अहमदी इंजीनीयर्ज़ ने बड़ी मेहनत के बाद स्वयं तैयार किया था

इस वर्ष इस मशीन में मज़ीद बेहतरी लाई गई है। पहले देग रखने के बाद एक बटन दबाना पड़ता था जिससे देग की धुलाई का फंक्शन शुरू होता था। परन्तु अब यह बटन बिना दबाए बल्कि जूंही देग रखी जाती है स्वयं ख़ुद ऑटोमैटिक फंक्शन शुरू हो जाता है। एक ऐसा सेंसर सिस्टम लगाया गया है जिसके कारण से स्वयं ख़ुद फंक्शन शुरू होता है।

इस वर्ष इस मशीन में चार नई चीज़ें डाली गई हैं। अब ये मशीन बंद होने पर स्वयं बख़ुद ठीक हो जाती है। पिछली वर्ष दो मिनट में एक देग धुलती थी। इस वर्ष एक मिनट में एक देग धोती है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने प्याज़ काटने की मशीन देखी और प्रबन्ध का जायज़ा लिया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बाज़ार का निरीक्षण फ़रमाया। बाज़ार में विभिन्न चीज़ों और खानों के स्टालज़ लगाए गए थे। प्रत्येक स्टॉल के आगे ख़ुद्दाम अपने अपने स्टॉल पर तैयार की जाने वाली चीज़ों अपने हाथों में लिए खड़े थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रत्येक स्टॉल के आगे से गुज़रते हुए प्रेम पूर्वक विभिन्न चीज़ों में से कुछ मामूली लेते और तनावुल फ़रमाते। कई दफ़ा कुछ हिस्सा लेकर अपने इन ख़ुद्दाम को अता फ़र्मा देते। और कई दफ़ा उस चीज़ पर अपना हाथ रख देते और इस प्रकार ये ख़ुशनसीब ख़ुद्दाम और कार्यकर्ताओं अपने प्यारे आक़ा की शफ़क़त और बरकत से फ़ैज़ पाते रहे। प्रत्येक ने किसी न किसी रंग में अपने आक़ा की मुहब्बत और प्यार से फ़ैज़ पाया। हुज़ूर अनवर साथ-साथ अपने ख़ुद्दाम से बातचीत भी फ़रमाते रहे। कहाँ से आए हैं? कितना अरसा यहां हो गया है? और हालात भी फ़रमाते।

बाज़ार के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्राईवेट ख़ेमा जात के एरिया में तशरीफ़ ले आए और इंतेज़ामात का निरीक्षण फ़रमाया। कुल 630 की संख्या में प्राईवेट ख़ेमा जात लगाए गए और इनमें लगभग तीन हज़ार लोग ने रिहायश इख़्तेयार की। इन ख़ेमा जात के एरिया के इर्द-गिर्द। फैंस लगाई गई है और गेट भी बनाए गए हैं और इस सेहन में रजिस्ट्रेशन कार्ड की चैकिंग और स्कैनिंग के बाद ही दाख़िल हुआ जा सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इन ख़ेमा जात के बीच के मार्ग से गुज़रे विभिन्न फ़ैमिलियाँ अपने ख़ेमों के पास खड़ी थीं। कुछ ख़ेमे लग रहे थे सभी अपने हाथ बुलंद करके अपने प्यारे आक़ा की सेवा में सलाम अर्ज़ करते। हुज़ूर अनवर प्रेम पूर्वक उनके सलाम का उत्तर देते और बाज़ों से बातचीत भी फ़रमाते। ख़ेमों के विभिन्न साइज़ थे। हुज़ूर अनवर ने कुछ फ़ैमिलीज़ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ख़ेमा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 13 October 2022 Issue No. 41

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

में कितने लोग रह सकते हैं।

प्राईवेट ख़ेमाजात के सेहन के एक ओर एक हिस्सा Carvan के लिए विशेष किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने एक Carvan में मुक़ीम फ़ैमिली से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कितने लोग इस में रह सकते हैं। और क्या सहूलियात हैं।

एक Carvan के दरवाज़े पर एक तिफ़्ल बैठा हुआ था। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक उस बच्चे से बातचीत फ़रमाई और यहां मुक़ीम फ़ैमिली और संख्या के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया।

ख़ेमा जात और Carvans के इस रिहायशी हिस्सा के निरीक्षण के इस सैंकड़ों ख़ानदानों ने अपने प्यारे आक़ा को अत्यधिक क़रीब से देखा महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया और बरकतें पाइं प्रत्येक अपनी इस सआदत और ख़ुशनसीबी पर ख़ुश था।

इसके बाद आठ बजकर 35 मिनट पर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजना के जलसा गाह में तशरीफ़ ले गए और उनके समस्त इंतेज़ामात देखे और विभिन्न विभागों का जायज़ा लिया और हिदायात से नवाज़ा।

महिलाओं के जलसागाह के इंतेज़ामात के लिए एक नाज़िमा आला हैं और उनके साथ 15 नायब नाज़िमा आला,125 नाज़मात 480 नायबात और 3467 मावनात हैं अर्थात कुल 4088 महिलाओं और बच्चियां डयूटी के कर्तव्य सरअंजाम दे रही हैं।

(शेष ....)

(उद्धरित अख़बार बदर उर्दू 24 जुलाई 2014)

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार “अख़बार बदर” 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्फ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमअः और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमअः प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना सम्भव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(सम्पादक)

★ ★ ★

पृष्ठ 01 का शेष

बेहतरीन ग़िज़ा तय्यब से उतर कर हलाल है। इसके बाद और वस्तुएं हैं वे ममनू हैं, उनका खाना दुरुस्त नहीं। उदाहरणतः डाक्टर हैयज़े (महामारी) के दिनों में खीरे का खाना मना कर दे तो जबकि खीरा आम दिनों में हलाल और तय्यब है परन्तु उन दिनों में हलाल तो रहेगा तय्यब नहीं रहेगा। जो चीज़ें हराम के बाद हैं अर्थात ममनू हैं उनके विषय में भी हम कहेंगे कि उनका खाना दुरुस्त नहीं अर्थात उनके खाने से इन्सान नुक़्सान उठाएगा।

यह याद रखना चाहिए कि अल्लाह-तआला ने मुख़्तलिफ़ जानवर मुख़्तलिफ़ कामों के लिए पैदा किए हैं। कोई ख़ूबसूरती के लिए कि देखने में ख़ूबसूरत मालूम होता है। कोई आवाज़ के लिए कि उसकी आवाज़ बहुत उम्दा है। कोई खाने के लिए कि उसका गोश्त अच्छा है। कोई दवाई के लिए कि उसके गोश्त में किसी मर्ज़ से सेहत देने की ताक़त है। केवल जानवर और हलाल देखकर उसे नहीं खाना चाहिए। हो सकता है कि एक जानवर का गोश्त सेहत के लिए हानिकारक न हो मगर वह मसलन बाअज़ फसलों या इन्सानों में बीमारी पैदा करने वाले कीड़ों को खाता हो तो गोश्त के लिहाज़ से उसका गोश्त हलाल भी होगा और तय्यब भी, मगर फिर भी बनीनौ इन्सान का आम फ़ायदा देखते हुए उसका गोश्त तय्यब नहीं रहेगा, क्योंकि उसके खाने की वजह से इन्सान बाअज़ और फ़वायद से महरूम रह जाऐंगे।

मुझे बचपन ही में यह सबक़ सिखाया गया था। मैं बचपन में एक दफ़ा एक तोता शिकार कर के लाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अलसलोवस्सलाम ने उसे देखकर कहा महमूद ! इस का गोश्त हराम तो नहीं, मगर अल्लाह तआला ने हर जानवर खाने के लिए ही पैदा नहीं किया। कुछ ख़ूबसूरत जानवर देखने के लिए हैं कि उन्हें देखकर आँखें राहत पाएं। कुछ जानवरों को उम्दा आवाज़ दी है कि उनकी आवाज़ सुनकर कान लज़्ज़त हासिल करें। अतः अल्लाह तआला ने इन्सान की हर हिस्स के लिए नेअमतें पैदा की हैं वह सबकी सब छीन कर ज़बान ही को नहीं दे देनी चाहिऐं। देखो यह तोता कैसा ख़ूबसूरत जानवर है, दरख़्त पर बैठा हुआ देखने वालों को कैसा भला मालूम होता होगा।

ग़रज़ तय्यब के लिए जहां सेहत के लिहाज़ से अच्छा होना शर्त है वहां उसके खाने में यह भी शर्त है कि इस चीज़ के खाने से इन्सान के दूसरे हवास या दूसरे बनीनौ इन्सान या दूसरी मख़लूक़ का हक़ न मारा जाए। बल्कि दूसरों के जज़बात को मद्द-ए-नज़र रखना भी ज़रूरी है। इसलिए रसूले सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं مَا اسْتَخْبَثَتْهُ الْعَرَبُ فَهُوَ حَرَامٌ (रूहुल मानी, भाग 2 ज़ेर आयत तहरीम सूरत इनाम) अर्थात जिसे अरब ख़राब खाना समझें वह हराम है। यहां हराम के अर्थ यह नहीं कि ख़ुदा तआला के नज़दीक उसका खाने वाला गुनहगार होता है बल्कि मतलब केवल यह है कि अरबों के सामने उसे नहीं खाना चाहिए क्योंकि इस तरह आपस के ताल्लुक़ात खराब हो जाते हैं। इस वक़्त हिन्दुस्तान में गाय का गोश्त भी ऐसा ही है। मुस्लमानों को एहतियात चाहिए कि गाय का गोश्त हिंदुओं के सामने न खाया करें और उसका वर्णन भी उनके सामने न किया करें क्योंकि इससे उन्हें तकलीफ़ होती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 4, पृष्ठ 262 प्रकाशन क़ादियान : 2010 ई.)

★ ★ ★

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad